**ओ३म्**

**-वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव का तीसरा दिन-**

**‘यदि पुरुष द्यौ है तो स्त्री पृथिवी, यदि वह सागर है तो स्त्री नदी, यदि पुरुष पुष्प है तो नारी पंखुड़ी और यदि वह अग्नि है तो नारी ज्वाला है: डा. जयेन्द्र आचार्य’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में आज दिनांक 7 अक्तूबर, 2016 को प्रातः 6.30 बजे से ऋग्वेद पारायण यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा आचार्य डा. जयेन्द्र जी गुरुकुल नौएडा थे। यज्ञ में मंत्रोच्चार गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों श्री सुखदेव और श्री ओम्प्रकाश जी ने किया। यज्ञ के मध्य आचार्य जी ने वेद मंत्रों पर सुगम व्याख्यान एवं उपदेश भी किया। यज्ञ के बाद बिजनौर से पधारे युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य के मधुर व प्रभावशाली भजन हुए। इसके बाद आश्रम के सभागार में **‘नारी सम्मेलन’** का आयोजन सम्पन्न हुआ। विषय था **‘सामाजिक जीवन में गृहस्थ आश्रम का महत्व’।** सम्मेलन का आरम्भ गायत्री मन्त्र के पाठ और ओ३म् संकीर्तन से हुआ। सम्मेलन की संयोजिका श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा ने श्रोताओं को सम्बोधित कर कहा कि आज गृहस्थ को विकृत कर दिया गया है। जीवन त्याग पर आधारित न होकर भोग प्रधान बन गया है। आज के गृहस्थ गृहस्थ नहीं रहे अपितु नरक बन गये हैं। आरम्भ में श्रीमती स्नेहलता जी ने एक भजन गाया जिसके बोल थे **‘मैं तो कब से तेरी शरण में ही हूं। प्रभु मेरी ओर कुछ ध्यान दो। मेरे मन में जो अन्धकार है। हे मेरे ईश्वर उसे ज्ञान देकर दूर करो।’** माता सुरेन्द्र अरोड़ा जी ने कहा कि जो प्रभु का दरवाजा खटखटाता है उसे प्रभु अपनी गोद में लेने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। इसके बाद द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून की कन्याओं ने संस्कृत में मंगलाचरण प्रस्तुत किया और उसके अनन्तर एक भजन गाया जिसके बोल थे **‘थी गहरी निद्रा सदियों से सोया देश जगाया किसने? स्वामी दयानन्द ने स्वामी दयानन्द ने’।** एक छात्रा ने कहा कि महिलाओं की स्वतन्त्रता के सूत्रधार महर्षि दयानन्द थे। यह भी कहा कि यदि हम ऋषि की गाथा नहीं गाते तो हम ऋषि ऋण से उऋण नहीं हो सकते। इसके बाद एक और बहिन श्रीमती सरोज ने एक स्वलिखित भजन गाया जिसके बोल थे **‘ओम जी को मिलने का सत्संग ही बहाना है। दुनियां वाले क्या जाने मेरा दिल ही दिवाना है।‘** इसके बाद एक भजन आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रुहेल सिंह जी का हुआ जिसका आधार माता के सन्तान पर उपकार थे। यह भजन सुनकर हम व श्रोता साश्रु हो गये। भजन था **‘‘सबसे पहली सबसे सुन्दर है यह देन विधाता की, थपकी दे देकर मुझको सुख की नींद सुलाती थी। खाने की कोई चीज जब भी घर में कहीं से आती थी, सबसे पहले मुझे खिलाकर बाद में वो खुद खाती थी। कभी किसी कोने से जब वह मेरी आवाज सुनती थी। फौरन सारा काम छोड़कर, दौड़ी दौड़ी आती थी। आदि आदि”** श्री रूहेल सिंह जी ने कहा कि यहां बैठे हुए युवक व युवतियों ! आप माता-पिता की सेवा का संकल्प लो कि आप अपने माता-पिताओं को कभी वृद्धाश्रम में नहीं पहुंचायेंगे। उन्होंने कहा कि जब किसी मनुष्य को बुखार आता है तो वह **‘हाय मां हाय मां’** ही चिल्लाता है। कोई हाय पत्नी हाय पत्नी नहीं चिल्लाता। इन शब्दों में माता का गौरव छिपा हुआ है। उन्होंने कहा कि माता का दरजा महान है। हजारों जन्म लेकर भी हम मां का ऋृण नहीं चुका सकते।

 महिला सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि गृहस्थ आश्रम रुपी गाड़ी के स्त्री व पुरुष दो पहिये हैं। उन्होंने उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि यदि संसार से सभी पुरुष समाप्त हो जायें तो भी स्त्रियों (जो गर्भवती होंगी) से संसार चल सकता है परन्तु सभी स्त्रियों के न रहने पर संसार नहीं चल सकता। वेदों में नारी को देश का ध्वज कहा गया है। यह नारी झण्डे के समान ऊंची होती है। किसी देश की नारी को देख कर उस देश के समाज का ज्ञान होता है। जिस देश की नारी सुसंस्कृतज्ञ होगी उस देश का समाज भी उन्नत होगा। समाज की आधार शिलानारी है। उन्होंने कहा कि चार आश्रमों में सबसे बड़ा आश्रम संन्यास आश्रम है और सबसे महत्वपूर्ण आश्रम गृहस्थ आश्रम है। गृहस्थी दान देकर तीनों आश्रमों का पोषण करता है। जब हमारे गृहस्थी अच्छे होंगे तभी सन्तानें अच्छी हो सकती हैं।

 डा. अन्नपूर्णा जी ने कहा कि माता जैसा सोचती है, भोजन आदि करती व चिन्तन करती है, उस सबका संस्कार गर्भ में बच्चों पर पड़ता है। माता के चिन्तन व क्रियाकलापों के अनुसार ही सन्तान बनती है। विदुषी आचार्या ने माता मदालसा के बच्चों का उल्लेख कर कहा कि उन्होंने अपने 6 बच्चों को ऋषि व पति के कहने पर सातवें को राजधर्म से दीक्षित पुरुष बनाया जिसका कारण उनके अपनी सन्तानों को दिये हुए संस्कार थे। माता के बचपन के उपदेश के अनुसार ही सन्तानें बना करती हैं। सन्तान के निर्माण में माता के स्थान को उन्होंने सर्वोपरि बताया। धार्मिक माता की सन्तान भाग्यशाली होती है। उन्होंने कहा कि सुख का मूल धर्म और दुःखों का मूल अधर्म है। सन्तान के निर्माण के लिए माता का विदुषी और तपस्वी होना भी आवश्यक है। माता अपनी सन्तानों की प्रथम गुरु होती है। यदि मां यज्ञ करने वाली नहीं होगी तो उसके बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी। आतंकवादी, गुंडे व चोर-डाकू आदि इसलिए बनते हैं क्योंकि उनके माता-पिता संस्कारित नहीं होते। आपने पाश्चात्य सभ्यता का चित्रण करते हुए किट्टी पार्टियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि बहुत सी महिलायें शराब व सिगरेट आदि का सेवन भी करती हैं। इन अभक्ष्य पदार्थों व कुव्यवहार से उनके बच्चे भी उन के अनुरूप ही बनेगें। उन्होंने कहा कि आजकल के माता-पिताओं के पास अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए समय नहीं है। बच्चों का निर्माण गृहस्थाश्रम से ही होगा। यज्ञ करने वाली मां से राम पैदा होगा रावण नहीं। कौशल्या माता प्रतिदन यज्ञ करती थी। उसी से उनरकी सन्तान राम बनी। मां जीवन का निर्माण करने वाली होती है। आपने शिवाजी की माता जीजा बाई का उदाहरण भी इस अवसर पर दिया। उन्होंने कहा कि वेदों में प्रार्थना है कि हमारी बेटियां यशस्विनी, तेजस्वी तथा विदुषी बने। गर्भपात का उल्लेख कर डा. अन्नपूर्णा जी ने दुःख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यज्ञ सन्देश देता है कि जीवन को मर्यादाओं में बांध कर रखना है। मर्यादाओं से यदि हम बाहर जायेंगे तो हमारा सर्वनाश होगा। नारी यदि मर्यादा में नहीं रहेंगी तो समाज का पतन व सर्वनाश हो जायेगा। विदेशियों की अच्छी बातों का अनुकरण न कर हम उनकी बुरी बातों का अनुकरण करते हैं। विदुषी वक्ता ने कहा कि पति का उद्धार करने से पत्नी नाम बना है। इसी प्रकार पति इस लिए कहलाता है कि वह अपनी पत्नी की सर्व प्रकार से रक्षा करता है। उन्होंने कहा कि गृहस्थियों को परिश्रम से जितने भी धन की प्राप्ति हो उससे सन्तुष्ट रहना चाहिये। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि कि यदि पुरुष व नारी अच्छे होंगें तभी गृहस्थाश्रम अच्छा बनेगा।

 शास्त्रीय गीतों की मधुर गायिका बहिन श्रीमती मीनाक्षी पंवार ने दो गीत प्रस्तुत किये। पहला था **‘चलो मन ओम् नाम की ओर। जहां मन मेरा प्रभु प्रेम की ले आनन्द किल्लोल, चलो मन ओम् नाम की ओर।’ उनका दूसरा गीत था ‘चदरिया झीनी रे झीनी, ओम् नाम की मेरी चदरिया झीनी रे झीनी।’** आपने दोनों भजन शास्त्रीय संगीत व धुन के अनुरुप प्रस्तुत किये। आपकी मधुर आवाज और शास्त्रीय शैली में गीत सुनकर श्रोता भावविभोर हो उठे। इसके बाद तपोवन विद्या निकेतन की बालिकाओं ने एक गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘हर देश में तू हर वेश में तू तेरे नाम अनेक तू एक ही है।’** द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की कन्याओं ने भी एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘मेरे देश की बहनों तुमको देख रही दुनियां सारी तुम पे बड़ी है जिम्मेदारी।। हर घर को तुम स्वर्ग बना दो हर घर को फुलवारी, तुम पे बड़ी जिम्मेदारी।’** इसके बाद डीएवी स्नातोकोत्तर विद्यालय की आचार्या डा. सुखदा सोलकी जी ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि विवाह एक बन्धन है। आजकल के युवा युवतियां विवाह करना नहीं चाहते। यदि वह विवाह करले तो विवाह निभाने की स्थिति कठिन होती है। इसके बाद सन्तति की समस्या भी आती है। उन्होंने कहा कि आजकल की युवापीढ़ी को स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता प्रिय है। आपने आजकल की किट्टी पार्टियों का उल्लेख कर उसमें होने वाले क्रियाकलापों और मानसिकता पर प्रकाश डाला और उसकी आलोचना की। उन्होंने बताया कि उनकी मित्र बहिनों ने उत्तराखण्ड के शहीद सैनिक को श्रद्धांजलि हेतु यज्ञ करने के उनके प्रस्ताव पर उदासीनता दिखाई और कुछ ने कहा कि हमें तो पत्ते खेलना अच्छा लगता है। एक वेद मन्त्र प्रस्तुत कर उन्होंने कहा कि देव अच्छा आचरण करने वालों की इच्छा करते हैं।

 कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़़ा ने **मधुर, तथ्यपूर्ण, प्रमाणिक और प्रभावशाली वक्ता डा. जयेन्द्र आचार्य जी को विशेष विद्वान होने के कारण सम्बोधन के लिए आमंत्रित किया। आचार्य जी तीन गुरुकुलों का संचालन करते हैं जिनमें से एक कन्या गुरुकुल भी है। उन्होंने कहा वेदों में कहा गया है कि यदि पुरुष द्यौ है तो स्त्री पृथिवी है, यदि पुरुष सागर है तो स्त्री नदी है, यदि पुरुष पुष्प है तो नारी पंखुड़ी है, यदि पुरुष अग्नि है तो नारी ज्वाला है, आदि आदि, एसे अनेक वर्णन व उदाहरण प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि श्रद्धा का अर्थ सत्य को प्राप्त करना होता है। उन्होंने बहुत ही प्रभावपूर्ण ढंग से कहा कि स्त्री व पुरुष में न कोई छोटा होता है और न कोई बड़ा होता है। गृहस्थ जीवन की गाड़ी के दो पहियों का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि यदि इसके दो पहियों, स्त्री व पुरुष, में सन्तुलन नहीं होगा तो दोनों अपने लक्ष्य पर पहुंच नहीं सकते। जिस गृहस्थ के स्त्री व पुरुष अपने दायित्व को जानते हैं उनकी गाड़ी अपने लक्ष्य पर पहुंचती हैं। उन्होंने कहा कि मैं आज की परिस्थितयों का ध्यान कर बोलने वाला वक्ता हूं। एक पंच सितारा होटल में उनके द्वारा कराए गये एक विवाह संस्कार का उल्लेख कर उन्होंने बताया कि वहां एक बैरा बार बार उनके सम्मुख शराब ला रहा था। डांटने पर उसने कहा कि पण्डित जी आप धोती धारी हैं। यहां अनेक सात मीटर की साड़ी पहनी हुई महिलाओं ने चार चार पैग लगा लिये हैं। स्त्री पूजा की चर्चा कर विद्वान वक्ता व आचार्य ने कहा कि ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त कोई अन्य विद्वान व महापुरुष सम्यक् दृष्टि से वेदार्थ नहीं कर पाया है। उन्होंने कहा कि ऋषि कहते हैं कि देवता कहीं से आने वाले नहीं है। जो पुरुष अपने घर की स्त्री का सम्मान करते हैं वह देवता बन कर विचरण करते हैं। उन्होंने कहा कि चारों वेदों का बहुत अधिक महत्व है परन्तु यह एक सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकते जबकि एक साधारण महिला सन्तान उत्पन्न कर सकती हैं। विद्वान वक्ता ने महिलाओं की इस शिकायत कि हम से ही मीठी वाणी बोलने की अपेक्षा क्यों की जाती है?, इस पर विद्वान वक्ता ने कहा कि ईश्वर ने महिलाओं को ही मीठी वाणी बोलने का खजाना दे रखा है। यह उनका विशेष गुण है। आपने सन्त तुकाराम का एक प्रेरणादायक प्रसंग भी प्रस्तुत किया और कहा कि घर में अन्न नहीं था। पत्नी ने उन्हें धन कमाने भेजा। उन्होंने गन्ने लिए और बेचने लगे। एक गरीब बच्चा आया, उनसे गन्ना मांगा, सन्त होने के कारण उन्होंने दे दिया। उस बच्चे को देख कर और बच्चे भी आये और सन्त जी से गन्ना मांगा। उन्होंने उन्हें भी गन्ना दे दिया। सभी गन्ने समाप्त हो गये, केवल एक बचा। वह उसे लेकर घर पहुंचे। पत्नी ने पैसे मांगे तो बोले की सभी गन्ने तो बच्चे ले गये, वह गरीब थे, उनके पास पैसे नहीं थे। पत्नी को उन पर बहुत क्रोध आया। उसने उनकी पीठ पर उस गन्ने से प्रहार कर डाला जिससे उसके उस गन्ने के दो टुकड़े हो गये। पत्नी के इस व्यवहार पर संत तुकाराम ने उन्हें शान्त व मधुर वाणी में उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि तुम कितनी अच्छी हो। मैं सोच रहा था कि इस एक गन्ने का क्या करूं। अब तुमने दो कर दिये हैं अतः दोनों एक एक टुकड़े का सेवन कर लेते हैं। उनके इस व्यवहार से पत्नी का क्रोध दूर हो गया और उन पर दया उमड़ पड़ी। वह बोली कि मैं मरती हूं तो मरूं। अन्न या भोजन मिले या न मिले। मेरी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि हर जन्म में आप ही मेरे पति हों। आचार्य जी ने कहा कि गृहस्थ का आधार तो प्रेम एवं समर्पण से युक्त जीवन है। इसी के साथ आपने अपना प्रवचन समाप्त किया।** इसके बाद स्वामी दिव्यानन्द जी ने सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार नारी सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अपरान्ह का कार्यक्रम 3.30 बजे से आरम्भ हुआ जिसमें ऋग्वेद पारायण यज्ञ हुआ। ब्रह्मा आचार्य डा. जयेन्द्र जी थे।यज्ञ के मध्य वेद मन्त्रों पर प्रभावशाली व्याख्यान एवं उपदेश करते हुए आपने श्रद्धालुओं को धर्म व दर्शन के अनेक गूढ़ तत्वों व विचारों से भी लाभान्वित किया। यज्ञ के पश्चात श्री कुलदीप आर्य जी का एक भजन हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम 7.30 बजे आरम्भ होकर 9.40 बजे तक चला। मुख्य रूप से श्री कुलदीप आर्य जी के लगभग एक घंटा भजन हुए जो ईश्वर भक्ति, देश भक्ति व सामाजिक विषयों पर आधारित थे। एक भजन के बोल थे **‘भूलू न भूलू न भूलू न प्रभु याद रहे’।** एक अन्य भजन के बोल थे **‘ओम् बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी, सकल काम तज ओम् नाम भज, मुख मण्डल में पड़ी पड़ी।‘** तीसरा भजन था **‘प्रभु के गीत गाने में मजा है’**। आपने देश भक्ति का जो गीत सुनाया वह बहुत मार्मिक था। इसे सुनकर सभी श्रोताओं की आंखे गीली हो गई। श्रोताओं ने गायक महोदय को धनराशियां देकर उनकी प्रतिभा का सम्मान किया। देश भक्ति के गीत के बोल थे **‘जो कुछ भी था पास मेरे, कर के हवाले सब कुछ तेरे, माता मैं जा रहा हूं।’**

श्री कुलदीप आर्य जी के भजनों के बाद लगभग 35 मिनट आचार्य डा. जयेन्द्र जी का प्रवचन हुआ। आपने अपने प्रवचन में देश भक्ति के विषय को आगे बढ़ाया और भगत सिंह जी की फांसी की घटना से जुड़े कुछ विषयों को प्रस्तुत किया। आपने बताया कि शहीद भगत सिंह जी को गुलाब जामुन बहुत पसन्द थे। उनकी माता शहादत से दो दिन पूर्व उनसे मिलने आई तो वह भगतसिंह जी के लिए गुलाब जामुन बना कर लाई थी। भगत सिंह जी ने उन्हें खाने से मना कर दिया। उन्होंने माता को कहा कि वह विवाह कर रहे हैं। मां द्वारा वधू का नाम पूछने पर उन्होंने शर्त लगाई कि वह पहले वचन दें कि वह घर पर विवाह के गीत गवायेंगी और जो पड़ोसी गीत गायेंगे उन्हें यह गुलाब जामुन खिलायेंगी। शर्त मानने पर उन्होंने कहा था कि वह देश की आजादी के साथ विवाह कर रहे हैं। विद्वान वक्ता ने बताया कि भगत सिंह जी एक बार कोर्ट में न्यायाधीश के सामने हंसे थे। उन्होंने न्यायाधीश को कहा था कि वह फांसी के फंदे पर भी हंसेंगे। उस न्यायाधीश को उन्होंने उनकी फांसी के दिन जेल में उपस्थित रहने का निमन्त्रण दिया था। वह आया और उसने देखा कि भगत सिंह फांसी के फंदे पर भी खुश दिखाई दे रहे थे जिससे वह लज्जित हुआ। डा. जयेन्द्र जी ने कहा कि जब भी आप कोई संकल्प लें तो फिर अंजाम की परवाह न करके उसे हर स्थिति में सफल करने का प्रयत्न करें। आपने ऋषि दयानन्द के सच्चे शिव के दर्शन के संकल्प की याद दिलाई और बताया कि अनेक बाधायें आने पर भी वह अपने संकल्प को भूले नहीं थे। उन्होंने हर प्रकार से उसे पूरा करने के लिए तप किया। विद्वान वक्ता ने तप का वर्णन करते हुए कहा था कि शुभ संकल्पों को पूरा करने के लिए कष्ट व द्वन्दों को सहन का नाम तप है।

डा. जयेन्द्र आचार्य जी ने करनाल के एक गांव की चर्चा कर बताया कि 70 वर्ष पहले वहां बेटी पैदा होने के एक दिन बाद उसे चारपाई के पाये से दबा कर मारने का रिवाज था। उन्होंने बताया कि गांव के लोग प्रसूता के घर आ जाते थे। एक दिन की बच्ची को लेकर उसके सीने पर चारपाई का पाया रखकर सभी लोग चारपाई पर बैठ जाते थे जिससे दब कर वह मर जाती थी। गांव के एक प्रधान के घर जब एक लड़की पैदा हुई तो वह उसके मोह के कारण इस प्रथा का विरोध करने के लिए वहां से दिल्ली भाग आया जहां संयोग से उसे महात्मा आनन्द स्वामी जी मिल गये। उसने अपनी कथा उन्हें बताई और उस बच्ची की जान बचाने की विनती की। स्वामी जी ने आश्वासन दिया और उसके साथ उसके गांव आये। वहां आकर उन्होंने अन्न व जल त्याग कर अनशन किया और गांव के लोगों से मांग की कि हर व्यक्ति उन्हंे लिख कर दे कि वह कन्या पैदा होने पर उसका वध नहीं करेगा। अन्ततः सबने उनकी बात मानी। विद्वान वक्ता जयेन्द्र जी ने बताया कि गांव में इस बारे में एक शिलालेख लगा है। उन्होंने बताया कि डी.ए.वी. कालेज प्रबन्ध समिति ने वहां एक स्कूल खोलने का निश्चय किया है। यह लड़की अब 70 वर्ष की है और मध्य प्रदेश में रहती है। आचार्य जी का व्याख्यान बहुत सरस व प्रभावशाली होता है। श्रोताओं को ऐसा बांधे रखता है कि उसे सुन कर और अधिक सुनते रहने का मन होता है। किसी प्रकार की थकान व आलस्य श्रोता को अनुभव नहीं होता। हम भी आचार्य जी के प्रवचनों को सुनकर अभिभूत हैं। जीवन में पहली बार उन्हें देखा व उनके प्रवचन सुने। पहले उनके बारे कोई जानकारी नहीं थी। आचार्य जी प्रभात आश्रम गुरुकुल के स्नातक हैं। इ सी के साथ इस समाचार को विराम देते हैं।

  **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**